Dr. Purushottam (1)

बस्तियों के प्रतिरूप

बस्ती से तात्पर्य वैसी अधिवास से है जहाँ कार्यशील पुरुष ~~जनसंख्या का अधिकांश~~ प्राथमिक क्रिया में संलग्न हो।

ग्रामीण बस्ती प्रतिरूप का तात्पर्य ग्रामीण बस्तियों के ज्यामितीय बनावट से है।

ग्रामीण बस्ती के प्रतिरूप का निर्धारण कई कारकों से होता है —

i) भौतिक कारक – जैसे तालाब, कुआँ, पोखर, टीले, भूमि का ढाल, सीढ़ीनुमा धरातल / आकृति, जलस्तर, दलदली भूमि।

ii) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक – ऐतिहासिक घटना क्रम, सड़क एवं गली, खेतों का प्रतिरूप, धार्मिक संस्थाएँ, जातीय संरचना इत्यादि

iii) उपरोक्त कारकों में सड़क एवं गली ग्रामीण बस्ती के
सुरक्षात्मक कारक
धार्मिक ... मिनार

ट्रिवार्था - ब्लाश तथा चिशोल्म जैसे विद्वानों ने ग्रामीण बस्तियों को नि० लि० वर्गों में विभाजित किया है—

i) आयताकार प्रतिरूप —

आयताकार बस्तियों का विकास मुख्यतः वैसे मैदानी क्षेत्रों में होता है, जहाँ मिट्टी उपजाऊ होती है, स्थल समतल होता है और बाढ़ का भय नहीं होता है। आयताकार प्रतिरूप में सड़कें प्रायः सीधी होती है और एक-दूसरे को समकोण पर काटती है।

उदाहरण – भारत को सतलज के मैदान, एवं ऊपरी गंगा मैदान, कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के मैदान।

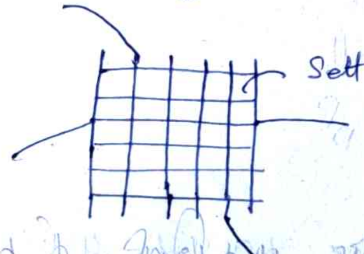

भारत के अधिकांश मैदान आयताकार प्रतिरूप होता है।

② रेखीय प्रतिरूप — इस प्रकार की बस्तियों में भी दो समानांतर कतारें होती हैं। मकान एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं। बीच में मुख्य रास्ता होता है। रेखीय-प्रारूप में मकान स्थिति एक तरफ या रेखा में हो सकते हैं।

रेखीय प्रतिरूप के विस्तार की परिस्थितियाँ हैं —

(क) प्राकृतिक बाँध के किनारे - जैसे कानपुर बनारस में गोमती नदी के किनारे

(ख) नहर के किनारे — सरहिन्द नहर, इन्दिरा नहर —

(ग) राजमार्ग एवं रेलमार्ग के किनारे — तिरुवनंतपुरम से कन्याकुमारी तक राजमार्ग के किनारे, बिहार में N.H. -28 के किनारे NH-1 दिल्ली से अमृतसर —

(घ) समुद्र तट के किनारे — केरल के तटीय किनारे।

③ वृत्ताकार और अर्द्धवृत्ताकार प्रतिरूप — ऐसे पठारी प्रदेश की विशेषता है, जहाँ तालाब पाए जाते हैं। सामान्यतः तालाब अथवा झील के किनारे वृत्ताकार अथवा अर्द्धवृत्ताकार बस्तियाँ विकसित हुई हैं। ऐसी बस्तियों के विकास में पेयजल की सुविधा सबसे बड़ा कारण है। इसके अलावे इस ~~उदाहरण~~ प्रकार की बस्तियाँ मंदिर, मस्जिद, चर्च तथा गुरुद्वारा के चारों ओर अवस्थित होती हैं।

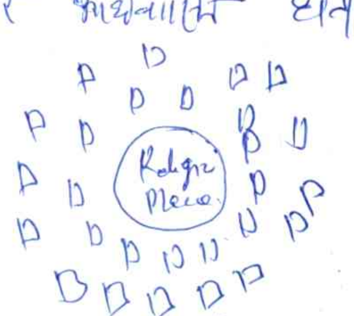

उदाहरण — गंगा-यमुना दोआब, मध्यप्रदेश, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र इत्यादि।

तारा प्रतिरूप – तारा प्रतिरूप का विकास मुख्यतः वैसे जगहों पर विकसित होता है जहाँ कई दिशाओं से मार्ग आकर मिलते हैं। लंबी अवधि के बाद ये बस्तियाँ उपनगरीय अथवा नगरीय बस्तियों में बदल जाता है। आधुनिक परिवहन सुविधाओं के कारण ये बस्तियाँ ग्रामीण सेवा केंद्र के रूप कार्य करता है

उदाहरण — पू० U.P, हरियाणा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु

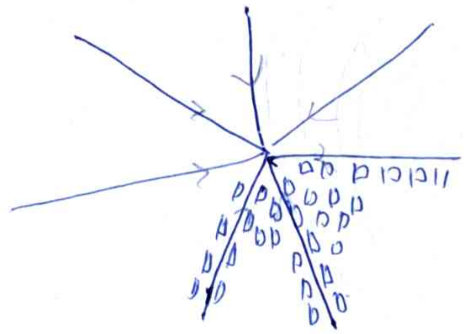

(5) त्रिभुजाकार प्रतिरूप – नदियों के संगम या सड़कों के मिलन स्थल पर ग्रामीण बस्तियों का विकास होता होता है। बस्ती की आकृति बाण के नोंक जैसी हो जाता है

उदाहरण – स्वर्णरेखा नदी एवं खरकई नदी के संगम पर साकची, देवप्रयाग इत्यादि

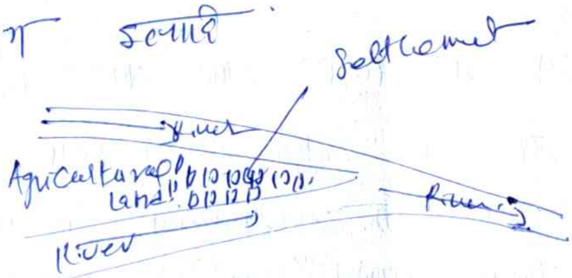

(6) नीहारिका प्रतिरूप — नीहारिकीय प्रतिरूप का विकास वृत्ताकार बस्ती का ही विकसित रूप है। यदि वृत्ताकार बस्ती जनसंख्या इकाई अधिक हो, तो केन्द्रीय स्थल के चारों कई वृत्त या अर्द्धवृत्त बन जाते हैं।

उदाहरण — गंगा-यमुना दोआब

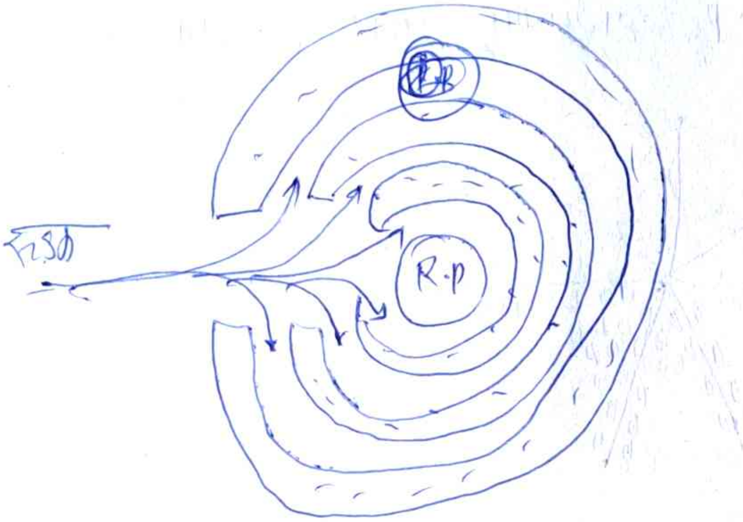

हाल के वर्षों में नियोजित ग्रामीण बस्ती के निर्माण के प्रयास किये गये हैं। भारत में नियोजित ग्रामीण बस्ती के अनेक उदाहरण हैं जैसे- पंजाब, हरियाणा, प० उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र में अनेक उदाहरण हैं।

शहरों में बढ़ते भार को नियोजित ग्रामीण बस्ती की रचना से कुछ कम किया जा सकता है। URD PUR

अतः उपर्युक्त के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वहाँ स्थान के आधार ग्रामीण बस्तियों के कई प्रतिरूप विकसित होते हैं।

X

3/12/01
~~Date~~

Settlement (1)

Pattern ~~Factors~~ and Types of Rural settlement

Paper I & II

Q.1 — ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप की व्याख्या भारतीय संदर्भ में करें? Paper I

S.Q — भारत में ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप — (P.T 1&2 question)

S.Q — गंगा के मैदान में ग्रामीण बस्तियों का प्रतिरूप Paper II

जहाँ मानव रहता है, वह बस्ती है

- स्थायी बस्ती
  - ग्रामीण
  - नगरीय
- अस्थायी बस्ती
  - ग्रामीण
  - नगरीय

मानव अधिवास के किसी भी स्थान को बस्ती कहा जाता है जनसंख्या, आकार और आर्थिक विशेषताओं के आधार पर मानवीय बस्तियों को पुनः ग्रामीण एवं नगरीय बस्तियों में वर्गीकृत किया जाता है। ग्रामीण बस्तियाँ वह है जहाँ रहने वाले लोग सामान्यतः प्राथमिक कार्यों में लगे होते हैं उनकी जनसंख्या ... है, लेकिन उसके आकार की कोई सीमा नहीं ... गुणों से ही ग्रामीण बस्ती ... सामान्य जनसंख्या आकार 5,000 से कम होती है लेकिन भारत के अधिकतर ग्रामीण बस्तियाँ ... होती ~~5,000~~

Note- Type और उसकी Pattern में ...

100

(2)

जनसंख्या अथवा 10,000 से भी अधिक है।
परन्तु! बड़े आकार की बस्तियों को नगरीय
बस्ति कहलाने के लिए आवश्यक है कि वहाँ
कम-से-कम 75% पुरुष कार्यशील जनसंख्या
गैर-प्राथमिक कार्यों में लगी हो। 5,000 अथवा
से अधिक की बस्तियाँ ग्रामीण बस्ती होती हैं।
यहाँ जनसंख्या की न्यूनतम सीमा - नगरीय
जनसंख्या की परिभाषा - अनुरूप नहीं होती है।
तथा ग्रामीण - बस्तियों की जनसंख्या की
कोई न्यूनतम सीमा नहीं है एक व्यक्ति
सेकनी व्यक्ति भी ग्रामीण हो सकती है।

भौगोलिक विशेषताओं की दृष्टि से
ग्रामीण बस्तियों के ~~तीन प्रमुख~~ दो प्रमुख
प्रकार होते हैं —

- गुच्छित बस्ती (5)
- प्रकीर्ण बस्ती (5)

अनेक भूगोलवेत्ताओं ने ग्रामीण
बस्तियों के इस वर्गीकरण - को बस्तियों का
प्रतिरूप भी कहा है। Long & Meig
कुछ भूगोलवेत्ता ग्रामीण - बस्तियों के प्रतिरूप
विशेषताओं के आधार पर ही इन्हें गुच्छित
और प्रकीर्ण बस्तियों में विभाजित करते
प्रकार का तात्पर्य बस्ती की विशिष्ट
प्रतिरूप की प्रादेशिक
विशेषताओं से है। बस्तियों के विशिष्टता
संदर्भ में
~~बस्तियाँ~~ गुच्छित
जनता

(3)

गुच्छित बस्तियों का तात्पर्य उन बस्तियों से है जहाँ मकान पूर्णतः एक-दूसरे से सटे हुए होते हैं छोटे से जगह पर बड़ी संख्या में जनसंख्या का ~~अधिवास~~ अधिवास होता है। ऐसे बस्तियों में अन्तर-मकान दूरी नगण्य होती है। अधिकांश गाँवों में तो एक ही दीवार दो परिवारों में विभाजित करते हैं ऐसे बस्तियों का विकास भिन्न भिन्न भौगोलिक परिस्थिति में होती है —

— बाढ़ का मैदान —

— अधिक उपजाऊ मैदान में भी गुच्छित बस्तियाँ होती हैं

— पेयजल आपूर्ति से उपलब्ध होने वाले मरुस्थल (ओएसिस) में

— सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में — नील नदी का मैदान —

— जंगली जानवरों का भय

— मानवीय जानवरों का भय

— धान प्रधान क्षेत्रों में भी — विशेषकर चावल उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में (यथा मालाबार तमिल)

— प्रजातीय/जातीय तनावों के भय — विभाजन बाद सुरक्षित बस्तियाँ और अधिक गुच्छित हो गयी

(6)

ग्रामीण — आदिवासी बस्तियों का विकास

(4)

गुच्छित बस्तियों के लाभ एवं हानियां

लाभ

~~सामाजिक सामुदायिक भावना का विकास होता~~

- सामुदायिक भावना का विकास
- अधिक सहयोग की भावना बढ़ा है।
- सुख-दुख में साथ देने की भावना है।

हानियां

Chisholm (Bance) human geography

- कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं है।
- भारतीय गाँव सच्ची संस्कृति का केन्द्र है
- मुकदमे वाली बहुत अधिक होती है यह मुकदमे वाली रहने की जगह (भूमि अधिकार) का लाभ होती है

पुनः गुच्छित बस्तियाँ पाँच प्रकार की होती है।

- आयताकार गुच्छित बस्ती
- लम्बाकार गुच्छित बस्ती
- रेखीय गुच्छित बस्ती
- गुच्छित खंड पूर्ण बस्ती
- गुच्छित खंड पूर्ण खंड बिखरी बस्ती

गुच्छित बस्ती भारत की आबादी गुच्छित बस्ती की विशेषता है। यहाँ बाढ़ के बाढ़ के मैदान की मैदान के मध्य ऊँचे स्थान पर (मुख्यतः मैदान के मध्य) प्राकृतिक बाँध के ऊपर पर हो आस के मध्य बड़े आकार की मैदान बस्तियाँ होती है।

पूर्वी U.P., बिहार का मैदान, W.B, ब्रह्मपुत्र घाटी और पूर्वी तटीय मैदान इसके अच्छे उदाहरण हैं। भारत के अतिरिक्त बांग्लादेश, म्यानमार, थाईलैंड के मेनाम घाटी, तथा कम्बोडिया व वियतनाम के मेकांग घाटी, जावा द्वीप एवं पूर्वी चीन में इस प्रकार की बस्तियाँ देखने को मिलती हैं।

सघन गुच्छित बस्ती का विकास भी मुख्यतः अर्धशुष्क प्रदेशों में हुआ है, जहाँ बाढ़ का भय कम है। किंतु मैदान उपजाऊ है अतः बाढ़ के भय कम होने के साथ ~~और उपजाऊ होने~~ बस्तियाँ केन्द्रीकृत होती हैं क्योंकि मृदा उपजाऊ होने के साथ अधिकांश में विकल्प कम होती है अतः सघन गुच्छित बस्तियाँ होती हैं। ऊपरी गंगा का मैदान व पंजाब व हरियाणा मैदान इसके अच्छे उदाहरण हैं। अन्य देशों में पाकिस्तान में इस प्रकार की बस्तियाँ हैं। इसी प्रकार की बस्ती नील मैदान की घाटी में है पुनः यूफ्रेटीज बाबी(?) द्वीप, इरावदी का मध्यवर्ती मैदान और उत्तरी चीन का मैदान, ह्वांगहो Hwangho का मैदान एवं मंचूरिया के मैदान, और H. का मैदान इस प्रकार के बस्तियों के अच्छे

(6)

रैखीय गुच्छित बस्तियों का विस्तार तीन परिस्थितियों में होता है —

— प्राकृतिक बाँध के ऊपर — अनेक भारत में गुच्छित बस्तियाँ, रैखीय गुच्छित बस्तियाँ भी होती हैं। गंगा नदी के इन किनारे इस प्रकार के अनेक गाँव बसे हुए हैं। कमला बलान और कोसी जैसी नदियों के किनारे भी इस प्रकार की बस्तियाँ मिलती हैं। प्राकृतिक बाँध के किनारे की गुच्छित बस्तियाँ मिस्र में भी देखने को मिलती हैं। वास्तव में बाढ़ के मैदान वाली नदियाँ एक किनारे प्राकृतिक बाँध देती हैं और यही कारण है कि जलोढ़ प्रदेश की प्रायः सभी नदियों के किनारे गुच्छित बस्तियों का विकास हुआ है।

— नहर के किनारे — सामान्य सिंचाई देने वाली नहरों के किनारों की गुच्छित बस्तियाँ विकसित हो जाती हैं। भारत में सरहिन्द नहर के किनारे रैखीय गुच्छित बस्तियाँ का विकास हुआ है। पाकिस्तान के पंजाब [illegible] में [illegible] नहरों के किनारे इस प्रकार की बस्तियाँ विकसित हुई हैं।

[illegible] बंगलादेश में

— राजमार्ग के किनारे — ~~व्यस्त~~ राजमार्ग के किनारे भी परिवहन तथा अपने उत्पाद के व्यापार की सुविधा के साथ गुच्छित बस्तियाँ विकसित हो जाती हैं भारत में त्रिवेंद्रम से कन्याकुमारी के बीच इस प्रकार की ~~गु~~ गुच्छित बस्तियों के अच्छे उदाहरण मिलते हैं मिस्र में अलेक्जेंड्रिया से काहिरा के बीच इस प्रकार की बस्ती का ~~[illegible]~~ विकास हुआ इसी प्रकार NH-1 यानी दिल्ली से अम्बाला के बीच इस प्रकार की बस्तियाँ विकसित हुई हैं

गुच्छित तथा पुरवा बस्ती का विकास द० एशिया की विशेषता है यहाँ एक प्रमुख बस्ती होती है और मुख्य बस्ती से सटे हुए कुछ दूरी पर छोटी-छोटी बस्तियाँ होती हैं जिन्हें पुरवा या टोला कहते हैं इनका विकास धर्म जाति या मत के आधार पर हुआ है उत्तरी भारत के मैदान में ये टोले जाति ~~[illegible]~~ के नाम से भी जाने जाते हैं

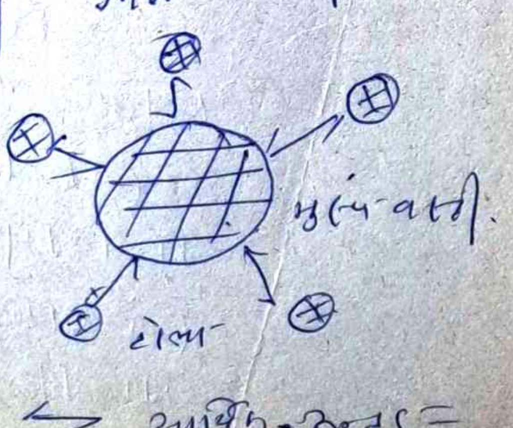

← उदाहरण-

8

मुख्य बस्ती एवं पूर्वी बस्ती के बीच मुख्यतः आर्थिक विकास होता है। ये श्रमिक के स्रोत होते हैं जो मानव श्रम के लिए आवश्यक है। भारत, बंगलादेश, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका पर्वतीय मैदान और म्यानमार का मैदान इसके अच्छे उदाहरण है।

मुख्यतः पर पूर्वी तट बिखरी हुई बस्तियाँ मुख्यतः भारत, बंगलादेश और पाकिस्तान की विशेषता है। यहाँ मुख्य बस्ती और पूर्वी बस्ती के अतिरिक्त यत्र-तत्र बिखरे हुए मकान होते हैं।

इस प्रकार

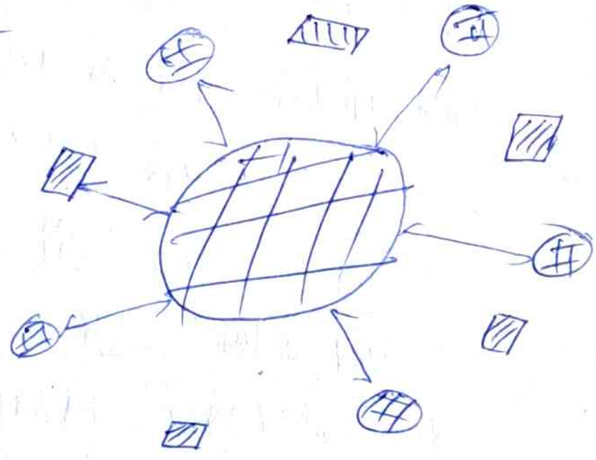

इस प्रकार की बस्ती का उदय हुआ है —

— जानकारी एवं क्षेत्रों में

— कृषि क्रांति के क्षेत्र में

जबकि बंगलादेश में

बस्तियों में पृथक ऐसे पाकिस्तान में हरित क्रांति से बस्तियों विकास के मकानों के प्रकार

कोसी एवं ब्रह्मपुत्र नदी के बीच बस्तियाँ प्रथम है इस प्रकार की बस्तियाँ विकसित हुई है। बिखरे हुए मकान इन बस्तियों के होते थे। इनका निवास बैठक मकान मुख्य गाँव में होता है लेकिन अपने पशुओं को रखने के लिए, खाद्यान्न रखने के लिए, कृषि औजार के लिए और तथा पालतू व मजदूरों के भोजन के लिए गाँव के बाहर भी एक मकान बनाए। ऐसे मकानों में सामान्यतः महिलाएँ नहीं रहती थी। आज भी ऐसे मकान अनेक गाँवों में देखने को मिलते हैं।

हरित क्रांति के प्रदेशों में अतिरिक्त खाद्यान्न उत्पादन और नवीन कृषि उपकरणों को रखने के लिए मुख्य ग्राम के पास ही मकान बनाने की प्रवृत्ति विकसित हुई है। इसे Tube Well हाउस भी कहा जाता है। पंजाब, हरियाणा, एवं पाकिस्तान का पंजाब प्रांत इस प्रकार के मकानों के उदाहरण है।

(10)

ग्रामीण बस्तियाँ (5)

ग्रामीण बस्तियों की विशेषता होती है कि यहाँ मकान फैले हुए छोटे हो दो मकानों के बीच काफी दूरी होती हो ऐसी बस्तियों का विकास भिन्न भिन्न ~~परिस्थितियों~~ में होता है—

- जलाशय का अभाव कम हो
- बाढ़ का भय नहीं हो
- या तो सभी जगह पेयजल की सुविधा हो या पेयजल यत्र-तत्र उपलब्ध हो।
- आवास के योग्य भूमि बिखरी हुई हो
- सभी जगह संसाधनों की समान उपलब्धता न हो
- जंगली जानवरों का भय न हो
- सम्पूर्ण प्रदेश की सुरक्षा व्यवस्था अच्छी हो
- जनजातीय / ग्रामीण हमले का भय नहीं हो।

उपर्युक्त परिस्थितियों के संदर्भ में ग्रामीण बस्तियों का विकास होता है। ग्रामीण बस्तियों का फैलाव मुख्यतः पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्रों की विशेषता है। इसके अतिरिक्त विकसित देशों में भी इस प्रकार की ग्रामीण बस्तियाँ पाई जाती हैं एवं धारणा है— इसके कई कारण

लाभ

- आर्थिक ~~[illegible]~~ दक्षता में वृद्धि होती है
- व्यक्तिगत ~~[illegible]~~ जीवन सुरक्षित रहता है अर्थात व्यक्तिगत जीवन में दूसरे का हस्तक्षेप नहीं होता है।
- तनावरहित ~~आपसी लड़ाई~~ भूमिविवाद नहीं होता है।

हानियाँ

- इसमें सामुदायिकता का अभाव होता है
- भावनात्मक लगाव नहीं होता है
- सुख-दुख का साथी नहीं होता है
- आर्थिक ~~[illegible]~~ दक्षता घटता ~~[illegible]~~ है
- श्रमिकों की कमी हो जाती है अतः कृषि का तेजी से यंत्रीकरण हुआ है

ग्रामीण बस्तियाँ भी निम्नलिखित पाँच प्रकार के होते हैं —

- पूर्ण प्रकीर्ण बस्तियाँ (Isolated / Homeste
- बिखरी प्रकीर्ण बस्तियाँ (Sprinkle)
- अर्द्ध प्रकीर्ण बस्तियाँ (Semi dispesse
- रेखीय प्रकीर्ण बस्तियाँ (Lineas
- छोटीनुमा प्रकीर्ण बस्तियाँ

(12)

प्रमाणी प्रबंध बस्तियाँ मुख्यतः विकसित देशों की विशेषता है। इसके अतिरिक्त द० अफ्रीका के केप प्रांत एवं वेल्स ... के मैदान तथा ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूज़ीलैंड तथा मध्य चिली में भी इस प्रकार की बस्तियों का विकास हुआ है। ~~भारत जैसे देशों के ... में~~ करने की इस प्रकार की प्रमाणी बस्तियाँ विकसित नहीं हुई है इन बस्तियों के विकास के लिए ज्ञान की ... आवश्यक है। प्रत्येक कृषक अपने-अपने खेतों में ही आवासीय मकान का निर्माण करते हैं। इसलिए अतः आवासीय मकानों का विकास होता है। विश्व के सभी विकसित प्रदेशों में इस प्रकार की बस्तियाँ पायी जाती है।

इंडिया में नहीं

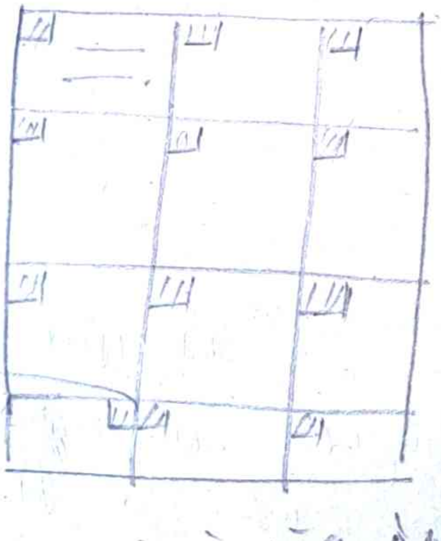

metarable

कृषक के खेत में ही मकान बने हुए हैं

आंतरिक ... का ... में